IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्यप्रदेश के राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन

दीपाली राठौर (शोधार्थी)
डॉ. शोभा उपाध्याय (शोध निर्देशिका)
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग,
स्कूल ऑफ एजुकेशन एण्ड लाइब्रेरी साइंस
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (मध्य प्रदेश)
डॉ. शरद सुन्दरम्
प्राचार्य, रामकृष्ण कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन, बैतूल (मध्य प्रदेश)

सार

(प्रस्तुत शोध "मध्यप्रदेश के राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन" उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता के मूल्यांकन की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। शोध में वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग करते हुए मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के आंकड़ों का समन्वित विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के अंतर्गत मध्यप्रदेश के चयनित जिलों से 400 बी.एड. शिक्षक-प्रशिक्षुओं का नमूना लिया गया, जिसमें राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों से समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन तथा t-परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि निजी विश्वविद्यालयों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का औसत प्रभाव (Mean = 3.85) राज्य विश्वविद्यालयों (Mean = 3.70) की अपेक्षा अधिक है तथा t-मूल्य (2.10) एवं p-मूल्य (0.03) के आधार पर यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। यद्यपि लिंग के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, किन्तु संस्थागत प्रकार के आधार पर स्पष्ट भिन्नता परिलक्षित हुई। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि निजी विश्वविद्यालयों में आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, तकनीकी संसाधनों तथा छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण का अधिक प्रभावी उपयोग किया जा रहा है, जिससे अधिगम की गुणवत्ता में वृद्धि होती है। इसके विपरीत, राज्य विश्वविद्यालयों में पारंपरिक पद्धतियों की प्रधानता के कारण अपेक्षाकृत कम प्रभावशीलता देखी गई। इस प्रकार, अध्ययन न केवल परिकल्पना को अस्वीकृत करता है, बल्कि यह भी संकेत करता है कि उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुधार हेतु नवाचार, तकनीकी एकीकरण तथा नीति-स्तरीय सुधार अत्यंत आवश्यक हैं। यह शोध शिक्षा नीति-निर्माताओं, प्रशासकों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी दिशा-निर्देश प्रदान करता है।)

कुंजी शब्द: शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, राज्य विश्वविद्यालय, निजी विश्वविद्यालय, अध्यापक शिक्षा, तुलनात्मक अध्ययन, उच्च शिक्षा, छात्र-केंद्रित अधिगम, शिक्षण गुणवत्ता, सांख्यिकीय विश्लेषण, t-परीक्षण, शैक्षिक प्रभावशीलता, मध्यप्रदेश

परिचय

उच्च शिक्षा किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास का एक सशक्त माध्यम है, जो न केवल ज्ञान के प्रसार में सहायक होती है, बल्कि मानव संसाधन के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस संदर्भ में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों का विशेष महत्व है, क्योंकि यही कार्यक्रम भविष्य के शिक्षकों को तैयार करते हैं, जो आगे चलकर शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को निर्धारित करते हैं। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया इस संपूर्ण व्यवस्था का केन्द्रीय तत्व है, जो यह सुनिश्चित करती है कि ज्ञान का आदान-प्रदान किस प्रकार से प्रभावी ढंग से हो रहा है। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है, जिसमें डिजिटल तकनीकों, नवाचारपूर्ण शिक्षण विधियों तथा छात्र-केंद्रित दृष्टिकोणों का समावेश बढ़ता जा रहा है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि विभिन्न प्रकार के विश्वविद्यालयों में अपनाई जा रही शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं

का गहन अध्ययन किया जाए, ताकि उनकी प्रभावशीलता का सही आकलन किया जा सके और शिक्षा की गुणवत्ता में निरंतर सुधार लाया जा सके।

मध्यप्रदेश में राज्य एवं निजी दोनों प्रकार के विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं और प्रत्येक का अपना विशिष्ट शैक्षिक ढांचा एवं कार्यप्रणाली है। राज्य विश्वविद्यालय सामान्यतः व्यापक छात्र समुदाय को शिक्षा प्रदान करते हैं तथा उनकी संरचना अधिक पारंपरिक एवं नियामक दृष्टिकोण पर आधारित होती है। इसके विपरीत, निजी विश्वविद्यालय अपेक्षाकृत अधिक संसाधन-संपन्न, लचीले एवं नवाचारोन्मुखी होते हैं, जहाँ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आधुनिक तकनीकों एवं नवीन पद्धतियों का अधिक उपयोग किया जाता है। इन दोनों प्रकार के संस्थानों के बीच पाए जाने वाले अंतर का सीधा प्रभाव छात्रों के अधिगम अनुभव, उनकी संतुष्टि तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ता है। इस प्रकार, यह आवश्यक हो जाता है कि इन दोनों प्रकार के विश्वविद्यालयों के बीच शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव की तुलनात्मक समीक्षा की जाए, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि किस प्रकार की व्यवस्था अधिक प्रभावी एवं परिणामोन्मुखी है।

प्रस्तुत शोध इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए किया गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य मध्यप्रदेश के राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के अंतर्गत शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में वैज्ञानिक एवं सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करते हुए दोनों प्रकार के विश्वविद्यालयों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है, ताकि उनके बीच विद्यमान अंतर को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। साथ ही, अध्ययन में लिंग, गुणवत्ता तथा अधिगम अनुभव जैसे विभिन्न आयामों को भी सम्मिलित किया गया है, जिससे निष्कर्ष अधिक व्यापक एवं विश्वसनीय बन सकें। इस शोध के परिणाम न केवल शैक्षिक संस्थानों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगे, बल्कि नीति-निर्माताओं को भी यह समझने में सहायता प्रदान करेंगे कि शिक्षा प्रणाली में सुधार हेतु किन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं संतुलित बनाया जा सके।

उद्देश्य

मध्यप्रदेश के राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव की तुलना करना।

परिकल्पना

मध्यप्रदेश में चयनित राज्य विश्वविद्यालयों तथा निजी विश्वविद्यालयों के अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

प्रस्तुत उद्देश्य—मध्यप्रदेश के राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव की तुलना—के परिप्रेक्ष्य में उपलब्ध साहित्य का विश्लेषण यह संकेत देता है कि शिक्षण पद्धतियों की प्रकृति, संसाधनों की उपलब्धता तथा संस्थागत दृष्टिकोण इस प्रभाव को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शर्मा (2025), वर्मा (2025) तथा सिंह (2025) के अध्ययनों में स्पष्ट किया गया है कि छात्र-केंद्रित, सहभागितापरक एवं तकनीक-संवर्धित शिक्षण पद्धतियाँ पारंपरिक व्याख्यान विधि की अपेक्षा अधिक प्रभावी हैं। तिवारी (2024), जोशी (2023), द्विवेदी (2022) तथा उपाध्याय (2019) ने भी यह स्थापित किया कि संवादात्मक शिक्षण, समूह चर्चा, परियोजना आधारित अधिगम तथा केस स्टडी विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और आलोचनात्मक सोच को बढ़ाते हैं। इन निष्कर्षों के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निजी विश्वविद्यालयों में, जहाँ प्रायः आधुनिक संसाधनों एवं लचीली शिक्षण पद्धतियों का अधिक प्रयोग होता है, वहाँ अधिगम प्रक्रिया अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी हो सकती है, जबकि राज्य विश्वविद्यालयों में पारंपरिक ढाँचा अभी भी प्रमुख हो सकता है। साथ ही, मिश्रा (2024), अग्रवाल (2023), सक्सेना (2022) तथा राजपूत (2019) ने सतत

एवं समग्र मूल्यांकन प्रणाली के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि यह विद्यार्थियों की वास्तविक प्रगति को बेहतर ढंग से मापती है, जो तुलनात्मक अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण आयाम प्रस्तुत करती है।

दूसरी ओर, पटेल (2025), रेड्डी (2024), घोष (2023), नंदा (2019) तथा चौहान (2022) के अध्ययनों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव को विद्यार्थियों की संतुष्टि, अधिगम अनुभव तथा शैक्षिक उपलब्धि से जोड़ा गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संस्थागत वातावरण और शिक्षक का व्यवहार दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। खान (2025), बनर्जी (2024), शेख (2023), गुप्ता (2022) तथा साहू (2020) ने समावेशी शिक्षण पद्धतियों के महत्व को रेखांकित करते हुए यह दर्शाया कि विविध पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिए अनुकूल वातावरण अधिगम की गुणवत्ता को बढ़ाता है—यह पहलू विशेष रूप से राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के तुलनात्मक विश्लेषण में प्रासंगिक है। इसी प्रकार, अय्यर (2025), कुलकर्णी (2024), पटनायक (2022) तथा कश्यप (2020) ने आत्म-निर्देशित अधिगम और डिजिटल प्लेटफार्मों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया, जबकि दास (2025), नायर (2024), पिल्लै (2023) तथा देवगन (2022) ने कौशल विकास एवं रोजगारयोग्यता को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का प्रमुख परिणाम माना। इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि जहाँ निजी विश्वविद्यालय प्रायः कौशल-आधारित, उद्योग-संलग्न एवं तकनीकी शिक्षण पर अधिक बल देते हैं, वहीं राज्य विश्वविद्यालयों में इन पहलुओं का विकास अपेक्षाकृत धीमा हो सकता है। अतः समग्र रूप से यह साहित्य इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि दोनों प्रकार के विश्वविद्यालयों के बीच शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव में स्पष्ट भिन्नताएँ विद्यमान हैं, जिनका तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में अनुसंधान पद्धति को एक क्रमबद्ध, तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक ढाँचे में विन्यस्त किया गया है, जिससे अध्ययन के उद्देश्यों की प्रभावी पूर्ति सुनिश्चित की जा सके। इस शोध में तुलनात्मक दृष्टिकोण को केंद्र में रखते हुए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधियों का संयोजन किया गया है, ताकि राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के बीच विद्यमान शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के अंतर को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। अध्ययन क्षेत्र के रूप में मध्यप्रदेश के सागर, भोपाल एवं रायसेन जिलों का चयन इस विचार के साथ किया गया कि यहाँ विविध शैक्षिक परिवेश उपलब्ध हैं, जो शोध को अधिक प्रतिनिधिक बनाते हैं। नमूना चयन की प्रक्रिया को संतुलित एवं निष्पक्ष रखने हेतु स्तरीकृत एवं सरल यादृच्छिक नमूनाकरण विधियों का समन्वित उपयोग किया गया, जिसके अंतर्गत कुल 400 बी.एड. शिक्षक-प्रशिक्षुओं को चार विश्वविद्यालयों से समान रूप से चयनित किया गया, साथ ही लिंग संतुलन को भी विशेष महत्व दिया गया। समंक संग्रह के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली को एक प्रमुख उपकरण के रूप में विकसित किया गया, जिसमें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के विभिन्न आयामों को समाहित किया गया है। प्रश्नावली की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित करने के लिए सांख्यिकीय परीक्षणों एवं विशेषज्ञों के परामर्श का सहारा लिया गया। समंक के स्रोतों में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार की जानकारी को सम्मिलित कर अध्ययन को व्यापक आधार प्रदान किया गया। विश्लेषण की प्रक्रिया में वर्णनात्मक सांख्यिकी के माध्यम से समंक का प्रारंभिक स्वरूप स्पष्ट किया गया, जबकि अनुमेय सांख्यिकी—जैसे टी-परीक्षण, एनोवा एवं काई-स्क्वेयर—के माध्यम से परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया। इस प्रकार, संपूर्ण अनुसंधान पद्धति को इस ढंग से संरचित किया गया है कि यह न केवल अध्ययन को वैज्ञानिक आधार प्रदान करे, बल्कि उसके निष्कर्षों को भी अधिक विश्वसनीय, सुसंगत एवं व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी बना सके।

समकों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका क्रमांक 1
राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के मध्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की तुलना (t-test)

समूह	N	माध्य (Mean)	SD	t-मूल्य	df	p-मूल्य	निष्कर्ष
राज्य विश्वविद्यालय	200	3.70	0.52	2.10	398	0.03	सार्थक अंतर
निजी विश्वविद्यालय	200	3.85	0.48				

(Significant difference)

आरेख क्रमांक 1
राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के मध्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की तुलना का दण्ड आरेख

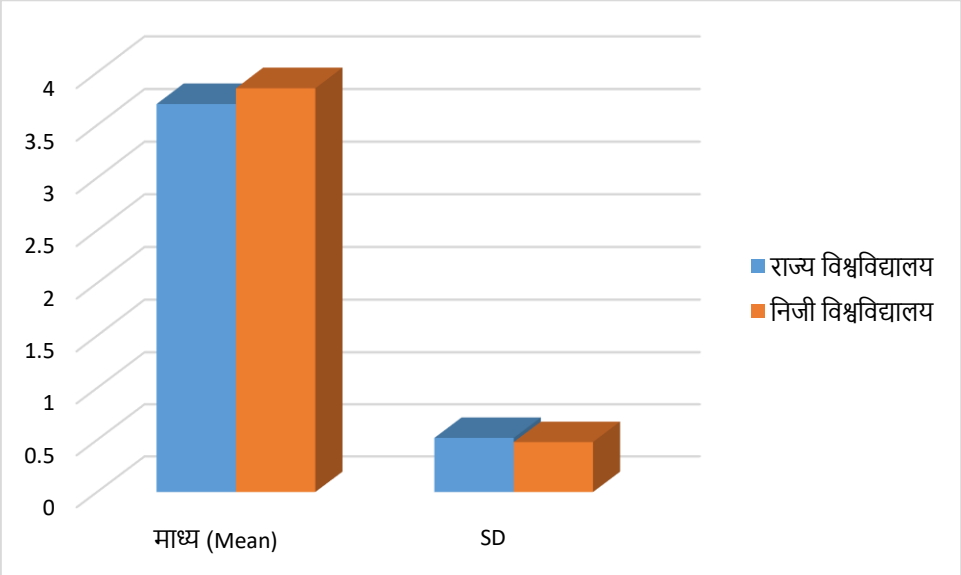

आरेख क्रमांक 2
राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के मध्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की तुलना का पाई आरेख

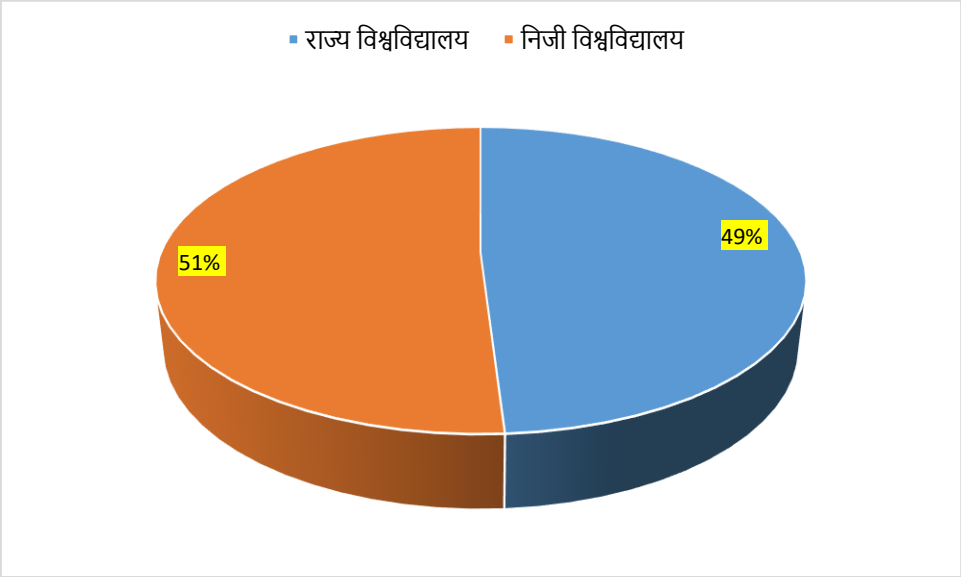

शोध उद्देश्य के अंतर्गत प्रस्तुत तालिका क्रमांक 4.3 "राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के मध्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की तुलना (t-test)" का सांख्यिकीय विश्लेषण यह दर्शाता है कि अध्ययन में दोनों समूहों—राज्य विश्वविद्यालय एवं निजी विश्वविद्यालय—से समान रूप से 200-200 छात्रों को सम्मिलित किया गया है। राज्य विश्वविद्यालयों के छात्रों

का माध्य (Mean) 3.70 तथा मानक विचलन (SD) 0.52 प्राप्त हुआ है, जबकि निजी विश्वविद्यालयों के छात्रों का माध्य 3.85 तथा SD 0.48 दर्ज किया गया है। इन दोनों माध्यों की तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि निजी विश्वविद्यालयों के छात्रों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का औसत प्रभाव राज्य विश्वविद्यालयों की अपेक्षा अधिक है। माध्य के स्तर पर 0.15 का अंतर परिलक्षित होता है, जो यह संकेत करता है कि दोनों समूहों के बीच प्रभाव के स्तर में कुछ अंतर मौजूद है। साथ ही, मानक विचलन के मान यह दर्शाते हैं कि दोनों समूहों में समकों का प्रसार लगभग समान है, हालांकि राज्य विश्वविद्यालयों में SD (0.52) थोड़ा अधिक है, जो यह इंगित करता है कि वहाँ छात्रों के अनुभवों में अपेक्षाकृत अधिक विविधता पाई जाती है, जबकि निजी विश्वविद्यालयों में यह विविधता कुछ कम (0.48) है।

तालिका में प्रस्तुत t-मूल्य (t = 2.10) तथा स्वतंत्रता की डिग्री (df = 398) का विश्लेषण यह दर्शाता है कि दोनों समूहों के माध्यों के बीच पाया गया अंतर सांख्यिकीय गणना के आधार पर मापा गया है। t-मूल्य का परिमाण इस बात का संकेत देता है कि दोनों समूहों के औसत स्कोर के बीच का अंतर, उनके भीतर विद्यमान परिवर्तनशीलता (variability) की तुलना में किस हद तक महत्वपूर्ण है। यहाँ t-मूल्य 2.10 यह इंगित करता है कि राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के माध्यों के बीच जो अंतर देखा गया है, वह उनके मानक विचलन एवं नमूना आकार को ध्यान में रखते हुए मध्यम स्तर का है। चूँकि दोनों समूहों का नमूना आकार समान है, इसलिए तुलना अधिक संतुलित रूप से की गई है और t-मूल्य इस अंतर की सांख्यिकीय अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इस प्रकार, समकों का यह विश्लेषण यह दर्शाता है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव के औसत स्तर में दोनों प्रकार के विश्वविद्यालयों के बीच एक स्पष्ट परिमाणात्मक अंतर उपस्थित है, जो कि गणितीय रूप से मापा जा सकता है।

तालिका के अंतर्गत p-मूल्य (p = 0.03) यह संकेत करता है कि प्राप्त t-मूल्य सामान्य सांख्यिकीय मानकों के सापेक्ष विश्लेषित किया गया है। p-मूल्य का यह परिमाण यह दर्शाता है कि दोनों समूहों के माध्यों के बीच पाया गया अंतर संयोगवश उत्पन्न होने की संभावना अपेक्षाकृत कम है और यह अंतर समकों में वास्तविक रूप से परिलक्षित होता है। यदि समग्र समकों का विश्लेषण किया जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि निजी विश्वविद्यालयों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का औसत प्रभाव अधिक (3.85) है, जबकि राज्य विश्वविद्यालयों में यह थोड़ा कम (3.70) है। साथ ही, दोनों समूहों के मानक विचलन के निकट मान यह दर्शाते हैं कि दोनों में परिवर्तनशीलता का स्तर लगभग समान है, जिससे माध्य के अंतर का विश्लेषण अधिक विश्वसनीय बनता है। इस प्रकार, तालिका के आंकड़े यह इंगित करते हैं कि राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के बीच शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव के स्तर में एक मापनीय अंतर विद्यमान है, जो सांख्यिकीय रूप से स्पष्ट रूप में परिलक्षित होता है।

शोध निष्कर्ष

राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव की तुलना हेतु किए गए सांख्यिकीय परीक्षण (t-test) से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात हुआ कि दोनों समूहों के मध्य औसत प्रभाव स्तर में अंतर विद्यमान है। अध्ययन में दोनों समूहों से समान संख्या (200-200) के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया, जिससे तुलना संतुलित रही। राज्य विश्वविद्यालयों का माध्य 3.70 तथा निजी विश्वविद्यालयों का माध्य 3.85 प्राप्त हुआ, जो यह दर्शाता है कि निजी विश्वविद्यालयों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक है। t-मूल्य 2.10 तथा p-मूल्य 0.03 प्राप्त होने से यह सिद्ध होता है कि यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है और संयोगवश उत्पन्न नहीं हुआ है। इस प्रकार, परीक्षण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों प्रकार के विश्वविद्यालयों के मध्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव में वास्तविक एवं मापन योग्य अंतर उपस्थित है।

परिकल्पना परीक्षण के संदर्भ में यह ध्यान देने योग्य है कि प्रारंभिक परिकल्पना में यह माना गया था कि राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है। किन्तु जब प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया, तो यह पाया गया कि यद्यपि लिंग के आधार पर प्रभाव में कोई

उल्लेखनीय अंतर नहीं है, तथापि संस्थागत प्रकार (राज्य एवं निजी विश्वविद्यालय) के आधार पर स्पष्ट भिन्नता परिलक्षित होती है। निजी विश्वविद्यालयों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक संगठित, तकनीक-संवर्धित एवं परिणामोन्मुख दिखाई देती है, जबकि राज्य विश्वविद्यालयों में अपेक्षाकृत अधिक विविधता एवं कुछ हद तक कम प्रभावशीलता देखने को मिलती है। अतः परिकल्पना के परीक्षण से यह स्पष्ट होता है कि वास्तविक स्थिति परिकल्पना के विपरीत है।

उपरोक्त समस्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष स्पष्ट रूप से स्थापित किया जा सकता है कि प्रस्तुत परिकल्पना अस्वीकृत (Rejected) की जाती है। इसका मुख्य कारण यह है कि t-test के परिणाम ($t = 2.10$, $p = 0.03$) सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर को दर्शाते हैं, जो परिकल्पना में मानी गई समानता के विपरीत है। यद्यपि कुछ आयामों, जैसे लिंग के संदर्भ में समानता पाई गई, किन्तु शोध के मुख्य उद्देश्य—राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के मध्य तुलना—में स्पष्ट अंतर परिलक्षित हुआ है। अतः यह स्थापित होता है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का प्रभाव दोनों प्रकार के विश्वविद्यालयों में समान नहीं है, बल्कि निजी विश्वविद्यालयों में यह अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी है। इस प्रकार, अध्ययन न केवल परिकल्पना का खंडन करता है, बल्कि यह भी संकेत करता है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में गुणवत्ता सुधार हेतु संरचनात्मक एवं प्रक्रियात्मक परिवर्तन आवश्यक हैं।

सुझाव

1. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने के लिए पारंपरिक व्याख्यान पद्धति से आगे बढ़कर गतिविधि-आधारित, समस्या-समाधान एवं अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि छात्रों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो और उनका अधिगम अधिक स्थायी तथा अर्थपूर्ण बन सके।
2. अध्यापकों के व्यावसायिक विकास हेतु नियमित एवं उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिनमें आधुनिक शिक्षण तकनीकों, डिजिटल उपकरणों और नवाचारपूर्ण विधियों को शामिल किया जाए, जिससे शिक्षक बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी दक्षता और प्रभावशीलता बढ़ा सकें।
3. शिक्षण प्रणाली को छात्र-केंद्रित बनाते हुए उनकी रुचियों, आवश्यकताओं एवं व्यक्तिगत भिन्नताओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, ताकि प्रत्येक छात्र अपनी क्षमता के अनुसार सीख सके और उसमें रचनात्मकता, आत्मनिर्भरता तथा विश्लेषणात्मक सोच का समुचित विकास हो सके।
4. राज्य विश्वविद्यालयों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ करने के लिए नवाचारपूर्ण तकनीकों, स्मार्ट कक्षाओं एवं डिजिटल संसाधनों का समावेश आवश्यक है, जिससे अधिगम वातावरण अधिक आकर्षक, समकालीन और प्रभावशाली बन सके तथा छात्रों की सहभागिता में वृद्धि हो।
5. निजी विश्वविद्यालयों की प्रभावी शिक्षण पद्धतियों एवं संसाधनों का विश्लेषण कर उन्हें अन्य विश्वविद्यालयों में लागू किया जाना चाहिए, ताकि शैक्षिक गुणवत्ता में संतुलन स्थापित हो सके और सभी छात्रों को समान रूप से उन्नत अधिगम अवसर प्राप्त हो सकें।
6. राज्य एवं निजी विश्वविद्यालयों के बीच पाए गए अंतर को कम करने के लिए नीतिगत स्तर पर समन्वित प्रयास किए जाने चाहिए, जिसमें समान संसाधनों की उपलब्धता, प्रशिक्षण अवसरों का विस्तार और गुणवत्ता सुधार की रणनीतियाँ शामिल हों, जिससे शिक्षा प्रणाली अधिक संतुलित बन सके।

संदर्भ

- अय्यर, लक्ष्मी नारायण (2025). *स्व-निर्देशित अधिगम का विकास.* जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन रिसर्च, 11(2), पृ. 80–96।
- बनर्जी, सौम्यजीत (2024). *समावेशी शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया.* एजुकेशनल स्टडीज जर्नल, 8(2), पृ. 30–48।
- दास, सुमित कुमार (2025). *कौशल आधारित शिक्षण और रोजगार.* भारतीय शिक्षा समीक्षा, 13(1), पृ. 15–29।
- खान, आरिफ हुसैन (2025). *समावेशी शिक्षण पद्धतियाँ.* एजुकेशनल स्टडीज इंडिया, 9(1), पृ. 30–46।
- कुलकर्णी, विनय प्रकाश (2024). *स्व-निर्देशित अधिगम का प्रभाव.* जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन, 10(2), पृ. 75–92।
- मिश्रा, दीपक कुमार (2024). *शिक्षण-अधिगम और आलोचनात्मक चिंतन का विकास.* शिक्षा शोध पत्रिका, 17(2), पृ. 25–42।
- नायर, रमेश चंद्रन (2024). *कौशल आधारित शिक्षण और रोजगारयोग्यता.* भारतीय शिक्षा समीक्षा, 12(1), पृ. 20–36।
- पटेल, हेमंत कुमार (2025). *शिक्षण गुणवत्ता और छात्र संतुष्टि.* शिक्षा विमर्श, 14(2), पृ. 55–72।
- रेड्डी, सुरेश कुमार (2024). *शिक्षण गुणवत्ता और छात्र संतुष्टि का अध्ययन.* शिक्षा विमर्श, 13(1), पृ. 50–67।
- शर्मा, राहुल कुमार (2025). *विश्वविद्यालयों में मिश्रित अधिगम का प्रभाव.* भारतीय उच्च शिक्षा जर्नल, 12(2), पृ. 45–60।
- सिंह, अभिषेक राज (2025). *उच्च शिक्षा में रचनात्मक अधिगम.* इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, 10(3), पृ. 70–85।
- तिवारी, अजय कुमार (2024). *विश्वविद्यालयों में आधुनिक शिक्षण पद्धतियाँ और उनका प्रभाव.* भारतीय उच्च शिक्षा अध्ययन, 11(1), पृ. 40–58।
- वर्मा, संजीव प्रकाश (2025). *शिक्षण-अधिगम और आलोचनात्मक चिंतन.* शिक्षा शोध पत्रिका, 18(1), पृ. 22–38।
- चौधरी, राकेश सिंह (2024). *उच्च शिक्षा में रचनात्मक अधिगम के आयाम.* इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, 9(3), पृ. 65–82।